आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2633 • उदयपुर, शुक्रवार 11 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

शिवपुरी, (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 27 फरवरी 2022 को मंगलम पोला ग्राउण्ड के सामने, शिवपुरी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता मंगलम, शिवपुरी, मध्यप्रदेश रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 457, कृत्रिम अंग माप 88, कैलिपर्स माप 45, की सेवा हुई तथा 67 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अक्षय कुमार सिंह जी (जिलाधीश महोदय, शिवपुरी), अध्यक्षता रमेशचन्द्र जी चंदेल (पुलिस अधीक्षक महोदय, शिवपुरी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान डॉ. राघवेन्द्र जी शर्मा (मध्यप्रदेश बाल संरक्षण आयोग, पूर्व अध्यक्ष), श्रीमान पवन जी जैन (मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी), श्रीमान राकेश जी गुप्ता (अध्यक्ष मंगलम), श्रीमान राजेश जी मजेजा (सचिव शिवपुरी), डॉ.शैलेन्द्र जी गुप्ता (उपाध्यक्ष शिवपुरी), इंद्र प्रकाश जी गांधी (समाजसेवी) रहे। डॉ. नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो.), श्री भगवतीलाल जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री मुकेश कुमार जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी मीणा, श्री हरिश जी रावत (सहायक), श्री प्रवीण जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

पृथ्वीपुर जिला निवारी (मध्यप्रदेश) में दिव्यांगों को राहत का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 27 फरवरी 2022 को कृशि उपज मण्डी पृथ्वीपुर, जिला निवारी हुआ। शिविर सहयोगकर्ता भारतीय मानव अधिकारी सहकार ट्रस्ट रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 156, कृत्रिम अंग माप 26, कैलिपर्स माप 15, की सेवा हुई तथा 35 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् शिशुपाल जी यादव (विधायक महोदय, पृथ्वीपुर), अध्यक्षता श्रीमान सुरेन्द्र प्रकाश जी (राष्ट्रीय चेयरमेन भारतीय मानव अधिकारी, सहकार ट्रस्ट), विशिष्ट अतिथि श्रीमान सुनिल जी (राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय मानव अधिकारी सहकार ट्रस्ट), श्रीमान रामेश्वर जी जाट (राश्ट्रीय महामंत्री), श्रीमान शंकर जी पटेल (जिला संगठन मंत्री) रहे।

डॉ. राकेश जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रामदास जी ठाकुर (पी.एन.डो.), शिविर टीम में श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री मनीश जी, श्री कपिल जी व्यास, (शिविर सहायक), श्री मुन्नासिंह जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन
एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
दिनांक व स्थान

13 मार्च 2022 : बजरंग आश्रम, हॉसी, हरियाणा

13 मार्च 2022 : चन्द्रपुर

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

ऑल इण्डिया एसबीआई फेडरेशन ने किया नारायण सेवा संस्थान का विजिट

ऑल इण्डिया स्टेट बैंक ऑफिसर फेडरेशन के अध्यक्ष दीपक जी शर्मा, जनरल सेक्रेटरी सौम्या जी दत्ता एवं फेडरेशन एसोसियेशन जयपुर सर्कल के अध्यक्ष रामवतार सिंह जी जाखड़ व जनरल सेक्रेटरी विनय जी भल्ला सहित 78 बैंक ऑफिसर्स ने सोमवार को नारायण सेवा संस्थान के स्मार्ट विलेज, सेवा महातीर्थ बड़ी परिसर का सेवाभाव से अवलोकन किया। फेडरेशन के अध्यक्ष शर्मा ने कहा संस्थान के सेवाओं के बारे में जितना सुना था उससे कहीं अधिक देखने को मिला है।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि दिव्यांग, निर्धन, मूक–बधिर, प्रज्ञा–चक्षु और अनाथ बच्चों की सेवा प्रकल्पों से प्रभावित होकर एसबीआई फेडरेशन ने 26 बच्चों की शल्य चिकित्सातार्थ सहयोग राशि भेंट की। नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों ने बैंक कर्मियों को गुलदस्ते देकर सत्कार किया। वहीं अभिनन्दन लेखाशाखा प्रमुख जितेन्द्र जी गौड़ व अम्बालाल जी गौड़ ने स्मृति चिह्न, मेवाड़ी पगड़ी और दुपट्टा पहनाकर किया। योजना प्रभारी दल्लाराम जी पटेल और राकेश जी शर्मा ने अतिथियों का संस्थान के 37 वर्ष के सेवा सफर की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन महिम जी जैन तथा आभार प्रदर्शन भगवान प्रसाद जी गौड़ ने किया।

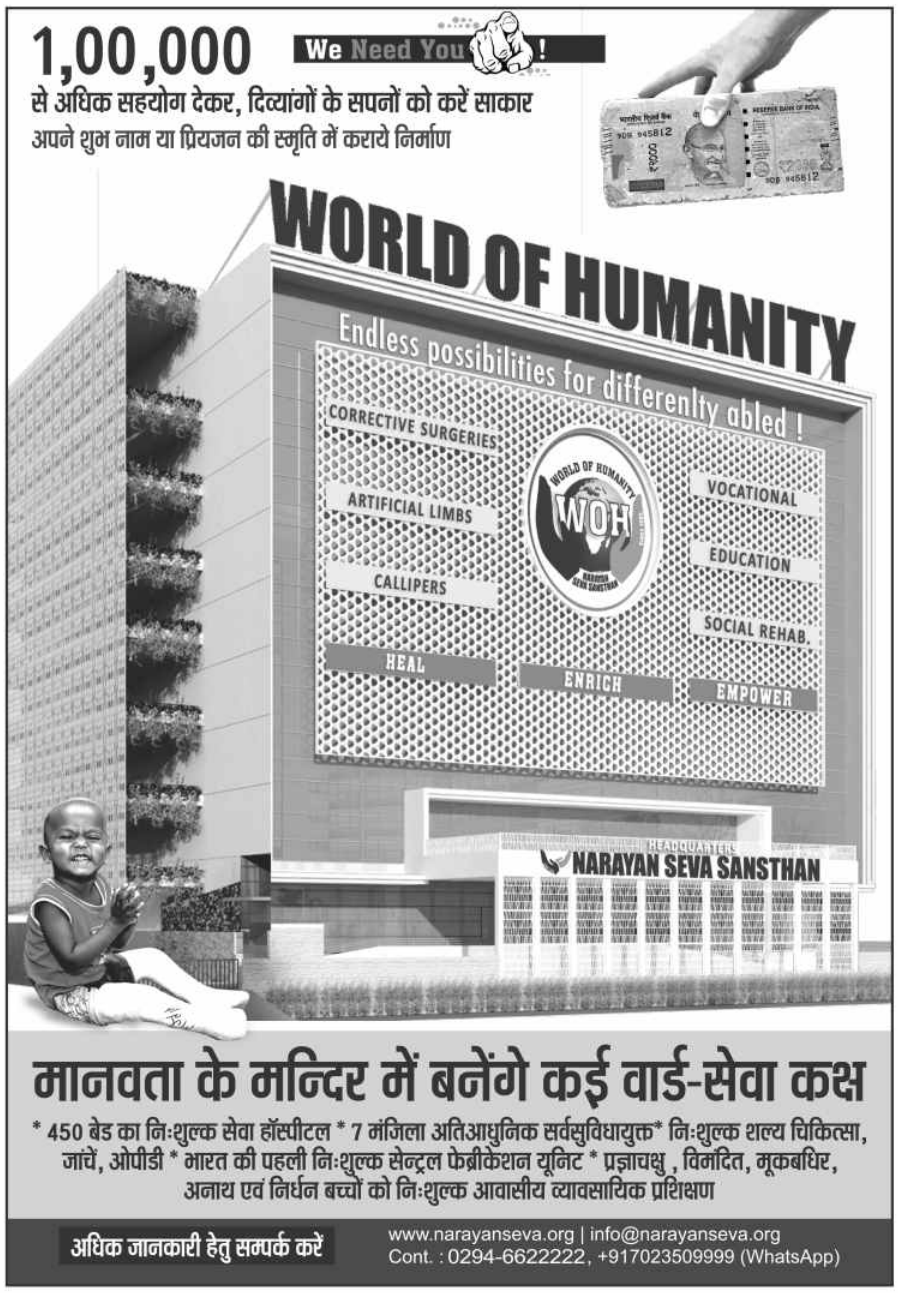

मन की शुद्धि

एक युवक संसार से विरक्त हो, फिलस्तीन के संत मरटिनियस के पास आया और बोला– "भगवन्! मैं आपकी सेवा में आ गया हूँ। कृपया मुझे आश्रय दें।" संत बोले– "जाओ, पहले शुद्ध होकर आओ।" युवक स्नान करने गया। संत ने एक सफाईवाली को बुलाकर, युवक के आने पर इस प्रकार झाड़ू लगाने को कहा, जिससे धूल युवक के शरीर पर उड़े। सफाईवाली ने वैसा ही किया। इस पर युवक उसे मारने दौड़ा, तो वह भाग गई। संत ने युवक को फिर से शुद्ध होकर आने को कहा। युवक के जाने पर संत ने सफाईवाली को युवक को छूने के लिए कहा। युवक स्नान करके आया, तो सफाईवाली ने झाड़ते–झाड़ते उसे छू लिया। युवक को गुस्सा आया। मगर उसने मारा तो नहीं, पर उसको खूब गालियाँ दीं। संत ने फिर शुद्ध होकर आने को कहा। इस बार संत ने उसे युवक पर कूड़ा डालने के लिए कहा। युवक जब नहाकर आया, तो उसने उस पर कूड़े की पूरी टोकरी उलट दी। किन्तु इस बार युवक बिल्कुल शांत रहा, बल्कि वह सफाई वाली को प्रणाम करके बोला–देवी! तुम मेरी गुरु हो। यह तुम्हारी कृपा थी कि मुझे अपने अहंकार और क्रोध का भान हो गया और मैं उन्हें अपने वश में कर सका।" तब मरटिनियस युवक से बोले – तुम्हारा मन शुद्ध हो गया है। अब तुम मेरे साथ रह सकते हो।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

चार मिले चौंसठ खिले,
बीस खड़े करजोड़।

बार–बार कहिये रामजी से भरतजी मिले खिल गये लाख–करोड़।

लाखों–करोड़ों पुलकावली जाग उठी। और भरतजी की आँखों से झर–झर के आँसू निकल रहे। रामजी के भी आँखों में प्रेम के अश्रु हैं। लक्ष्मणजी भी रो रहे हैं, भात्रुधनजी बिलख रहे हैं। सीताजी की आँखों को आँसूं नहीं रूकते। कौ ाल्या माता रोती है। सुमित्रा माता फिर कैकेयी, कैकेयी पछताती है। जब गलत काम करेगी उसको पछताना पड़ेगा। जो गलत काम करेगा।

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।
काम बिगाड़े आपणो, जग में होय हसांय।।

जब गुरुदेव जी बोले –कि इनके प्रेम के थाह को कोई भी समझ नहीं पाता। अरे ! जन्म देने वाली जननी माँ भी नहीं समझ पायी। और कैकेयी पछताती हुई आयी थी, रोती हुई आयी थी।

लखी सी असहीत, सरल दो भाई
कुटिल रानी, पछताती आई।

और पछतावे में बोल उठी–

ये सच है तो फिर लौट चलो घर भैया
अपराधिन मैं हूँ
तात तुम्हारी मैया।

मैं अपराधिनी हूँ, पापिनी हूँ, मैं दुष्टा हूँ। लोग कहते हैं – मंथरा के कहने में कैकयी आ गयी।

क्या कर सकती थी मरी मन्थरा दासी।

"चलने लगे लड़खड़ाते कदम, जागा विश्वास जिन्दगी के लिये"

शब्बीर हुसैन के परिवार में छ सदस्य है। पिता जी कॉस्मेटीक की दुकान चलाते हैं। जन्म के डेढ़ वर्ष बाद अचानक तेज बुखार से शब्बीर बेहोश हो गया। और होश आने पर उसने पाया कि उसके पांव पूरी तरह बेजान हो चुके थे। पूरा शरीर निष्क्रिय हो चुका था। श्री गुलाम मोहम्मद पिता ने शब्बीर को श्री नगर के एक अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि शब्बीर को परेलाइसिस हो चुका है इसका कोई इलाज नहीं है। गुलाम मोहम्मद ने शब्बीर को अन्य कई अस्पतालों में दिखाया लेकिन कहीं से भी आशाजनक उत्तर न मिलने पर गुलाम मोहम्मद टूट से गये।

एक दिन टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर गुलाम मोहम्मद के दिल में शब्बीर के पांवों पर चलने की उम्मीद जागने लगी।

कुछ दिन कार्यक्रम देखने के पश्चात् उन्होंने संस्थान में फोन किया और संस्थान से सकारात्मक उत्तर पाकर गुलाम मोहम्मद अपने पुत्र शब्बीर को लेकर नारायण सेवा संस्थान में आये । और शब्बीर के पांवों के दो सफल ऑपरेशन हुए शब्बीर के पांवों में नई जान आने लगी । ऑपरेशन से पूर्व शब्बीर की टांगे टेढ़ी थी। वह चलने – फिरने में बिल्कुल ही असमर्थ था। ऑपरेशन के बाद शब्बीर सामान्य रूप से अपने पांवों पर खड़ा होकर चलने लगा है।

शब्बीर जैसे ओर भी कई दिव्यांग – बंधु जिनका जीवन घर की चार दिवारी तक ही सिमट कर रहा गया है, उन्हें अपने पांवों पर खड़ा कर जीवन की मुख्यधारा में शामिल करने का सफल प्रयास नारायण सेवा संस्थान कर रहा है। संस्थान के ये सफल प्रयास आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही संम्भव हो पा रहे है।

सम्पादकीय

'काज परे कछु और है,
काज सरे कछु और'

नीति के प्रख्यात कवि रहीम ने अपने अनुभवों के आधार पर यह बात कही है। सच भी रहा होगा। आज के समय में तो यह ध्रुव सत्य हो गया है। जो दीपक रात भर जलकर हमारे लिये अंधकार से लोहा लेता है उसे हम ही सुबह होने पर बुझा देते हैं। यों इस बात को दो रूपों से देखना सटीक होगा। दीपक को हम बुझाते इसलिये हैं कि उससे ज्यादा प्रकाश सूरज से मिल रहा है। पर दीपक का महत्व इससे कम नहीं होता, यदि उसका आभार जताते हुए उसे बुझाया जाये तो फिर स्वार्थ की भावना नहीं रहेगी। सत्य तो यह है कि हरेक व्यक्ति, हरेक सामग्री, हरेक विचार का अपना महत्व होता है। उसका महत्व अपनी उपयोगिता को रेखांकित नहीं करता है वरन् उसका अपना अस्तित्व होता है। यह अस्तित्व साधारण दृष्टि से देखें तो स्वार्थ का संदेश देता है पर ठीक से देखें तो उसका अस्तित्व कभी मिटता नहीं है। हरेक की भूमिका अलग होती है, वह उसी भूमिका में उपादेय होता है।

कुछ काव्यमय

अस्तित्व और उपादेयता
परिपूरक हैं परस्पर।
इनका संतुलन कार्य को
साध लेता है तत्पर।
हरेक का अपना वजूद है,
वह समय पर उजागार होता है।
वही जीवन में
नई चेतना संजोता है।

अपनों से अपनी बात

ऋषि परम्परा का निर्वाह

बहुत भूख लग रही है माँ....., फुलका सिक तो गया आप देती क्यों नहीं। "अरे, क्या तुझे मालूम नहीं, पहली रोटी तो गाय की होती है, ठहर अभी सिक रही है दूसरी रोटी।" माँ का प्यार भरा उत्तर था। धन्य धन्य है भारत की ऋषि परम्परा को – जिसने हर माँ को यह सिखाया कि पहला फुलका गाय के लिए और अन्तिम श्वान के लिए। हमारी कमाई में से अतिथि का भी हक बनता हैं और मनुष्यों के ऊपर आश्रित रहने वाली गाय माता का भी। जब भी संस्थान के पचासों साथी मिलजुल कर वनवासी क्षेत्रों में सेवा कार्य करते हैं, याद आ जाते हैं किसना जी भील के वे आँसू जिन्होंने जन्म दिया "नारायण सेवा" को.....

अक्टूबर, 1985 का वह दिन –जनरल हॉस्पीटल, उदयपुर का सर्जिकल वार्ड नं. 11 बेड नं. 9/ हमेशा की तरह किसना जी (आदिवासी) से जाकर राम–राम की। अपनी जर्जर काया को साधते हुए उन्होंने राम–राम का जवाब दिया ही था कि हॉस्पीटल की भोजन

की ट्राली आ गई। मैंने थाली लेकर किसना जी को दी, उस गरीब बेसहारा ने एक रोटी खाई और बाकी तीन रोटियाँ और सब्जी रख दी अपने एल्युमिनियम के कटोरे में। पूछा गया –क्यों बासा" कई आपरी भूख बंद वेईरी है ? (बा साहब क्या आपकी भूख बंद हो रही है ?) एक मिनट वह मौन रहा, फिर रुँधे गले से बोला –"बावजी मने लेइने म्हारा दो भाई आयोड़ा है, दो दिन वेईग्या पैसा बिल्कुल नहीं रिया, आटो कटुँ लांवा, तीनी जणा मलेन ये रोटियां खावां हाँ (श्रीमान् मुझे लेकर मेरे दो भाई भी आये हुए है, दो दिन से पैसे बिल्कुल समाप्त हो गये हैं, आटा कैसे खरीदें, तीनों भाई मिलकर एक ही थाली का भोजन कर लेते हैं।) कुछ क्षण वह और मौन रहा, सहानुभूति मिलते ही उसके सब्र का बांध टूट गया और वह 60 वर्षीय किसना जी फूट–फूट कर रोने लगा अपने दुर्भाग्य और बेबसी पर....."

गीली हो आई हमारी आँखे–एक विचार आया – अपने परिचित पांच–सात घरों में खाली डिब्बे रखें – उनसे निवेदन किया कि "ऋषि परम्परा का पालन करते हुए कृपया अपना आटा गोंदने के पूर्व एक मुट्ठी आटा उन लोगों के लिए भी निकालें जो दो–दो राते 'भूखे रह कर गुजार लेते है', पर मांग सकते नहीं, बस अपनी गरीबी पर रह जाते हैं मन मसोस कर..... प्रभु कृपा, दुःखियों की दुआ एवं आप सभी के आशीर्वाद से इस प्रकार चला –आत्म संतुष्टि का एक क्रम....."स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।" बड़ी मिठास मिलती है, इस सब में –एक नहीं कई किसना जी भील –कई स्थानों पर मन ही मन पी रहे हैं अपने कडुए आँसुओं को। आइये, ऋषि परम्परा का निर्वाह करने हम बढ़े आगे – सबको साथ लिए – कदम से कदम मिलायें।

– कैलाश 'मानव'

जाको राखे साईयाँ

ईश्वर जिसे बचाना चाहता है, उसे कोई मार नहीं सकता और ठीक उसी तरह ईश्वर जिसे मारना चाहता है, उसे कोई बचा नहीं सकता। मृत्यु शैय्या तक पहुँचे प्राणी भी अक्सर ईश्वर– कृपा से पुनः जिंदगी की ओर लौट आते हैं।

जंगल में एक दिन मौसम बहुत खराब था। आसमान में बिजलियाँ चमक रहीं थीं, तेज आँधी चल रही थी। सभी जानवर अपनी जान बचाने हेतु

इधर–उधर भाग रहे थे। उसी जंगल में एक मादा हिरण थी, जिसका प्रसव–काल अत्यन्त निकट था। वह भी अपनी संतान को किसी सुरक्षित जगह पर जन्म देना चाहती थी। अचानक उसे कुछ झाड़ियाँ नजर आईं। वह दुबक कर उन झाड़ियों के अन्दर बैठ गई।

वह बच्चे को जन्म देने ही वाली थी कि उसकी नजर कुछ ही दूरी पर बैठे शेर पर पड़ी। वह भी उसकी ओर घात लगाकर बैठा था। हिरणी एकदम से सहम गई, उसने धीरे से गर्दन दूसरी तरफ घुमाई तो उसने देखा कि एक शिकारी भी उसकी तरफ तीर साधे कुछ ही दूरी पर बैठा हुआ था। उस हिरणी के लिए दोनों तरफ मौत, एक तरफ कुँआ तो दूसरी तरफ खाई के समान थी। वह पूर्णतः बेसहारा थी। उसने अपनी आँखें बंद कीं, परमात्मा को याद किया और दोनों तरफ की चिन्ताएँ छोड़कर पूरा ध्यान अपने प्रसव की ओर देना शुरू कर दिया। अचानक आसमान में जोरदार बिजली कड़की, जो सीधी शिकारी के हाथ पर गिरी और उसका हाथ जल गया तथा हड़बड़ाहट में उसके हाथ से तीर छूट गया, जो सीधा जाकर शेर को लगा।

तीर के तेज प्रहार से शेर के प्राण–पखेरू उड़ गए। हिरणी ने अपनी सारी चिन्ताएँ छोड़कर मात्र परमात्मा और अपने कर्म का ध्यान किया तो उसकी जान बच गई तथा उसने एक स्वस्थ शिशु को जन्म दिया।

सच ही कहा है कि –

जाँको राखे साईयाँ,
मार सके न कोय।
बाल न बाँका कर सके,
जो जग बैरी होय।।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

भाईसा की नाकौड़ा भैरव जी में बहुत आस्था थी। वहां दर्शन कर खाने पर बैठे तो उन्होंने अपनी थाली से आमरस की कटोरी निकाल कर बाहर कर दी। कैलाश ने बरबस ही पूछ लिया–आपको आमरस पसन्द नहीं ?

भाईसा बोले–मुझे आमरस ही सबसे ज्यादा पसन्द है, फिर आपने आमरस की कटोरी बाहर क्यूं निकाली ? कैलाश ने पूछा –जवाब मिला – जो बहुत अच्छा लगे उसकी ज्यादा आदत नहीं डालनी चाहिये इसलिये साल भर के लिये आमरस छोड़ रखा है, कैलाश को एक बात और सीखने को मिल गई।

शिविर पूर्ण होने के बाद कैलाश वापस सुमेरपुर लौट आया। एक दिन वह अपने कार्यालय में बचत काउन्टर पर बैठा था। उसके पास ही एक अन्य काउन्टर पर दूसरा क्लर्क बैठा था जो मनीआर्डर ले रहा था। यहां लम्बी कतार लगी हुई थी। कैलाश ने देखा कि एक व्यक्ति बार बार लाईन से आगे आकर बाबू से कुछ कहना चाह रहा था, बाबू उसे फटकार कर वापस लाईन में लगने को कहता। आधे घन्टे की प्रतीक्षा के बाद जब उसका क्रम आया तो उसने 300 रु. बाबू को देते हुए कहा– आपने ये 300 रु. लिये नहीं और मुझे रसीद दे दी, मैं घन्टे भर से आपको यही बताने की कोशिश कर रहा हूं, मगर आप सुनते ही नहीं। मैं मनीआर्डर की रसीद लेकर घर पर गया तो देखा 300 रु. मेरे हाथ में ही हैं इसलिये वापस देने आया, यही सोचा कि शाम को महीने भर की तनखा भी रख दोगे तो 300 रु. नहीं होंगे। उस वक्त बाबू की तनखा ही 208 रु. होती थी।

कैलाश इस व्यक्ति की ईमानदारी से प्रभावित हुआ तो अपने साथी बाबू की कृतघ्नता पर बहुत दुखी भी हुआ। बाबू ने उस व्यक्ति को न तो धन्यवाद दिया न ही उसकी ईमानदारी की प्रशंसा की वरन् झपट कर 300 रु. ले लिये।

कैलाश ने उस व्यक्ति को अपने पास बुलाया और उसकी प्रशंसा की। वह बोला–बेईमानी का पैसा पचता नहीं बाबूजी।

अंश - 030

ऊर्जा को पहचानें

हमारे पास हर वक्त दो ही तरह की ऊर्जा हर समय मौजूद रहती है, नकारात्मक और सकारात्मक। यह जगत एवं संपूर्ण ब्रह्माण्ड ऊर्जा सकारात्मक। यह जगत एवं संपूर्ण ब्रह्माण्ड ऊर्जा का भण्डार है। हमारा अस्तित्व ऊर्जा के अक्षय ओर क्षय पर ही निर्भर है। यह नियम सिर्फ हम मुनष्यों पर ही नहीं, बल्कि जगत के प्रत्येक जीव और जीवंत वस्तु पर लागू होता है। तुम खूब पूजा–पाठ करते हो, नियम–अनुशासन का पालन करते हो तब भी तुम्हारा व्यापार पुरजोर प्रयास के बावजूद प्रगति नहीं कर पा रहा है, तुम्हें और तुम्हारे परिजनों को बीमारियां घेर रही है, तरक्की के लिए प्रयास तो खूब करते हो, लेकिन कामयाबी नहीं मिल मिल रही। उदासीनता मन पर हावी हो गई है। आखिर तुम्हारे जीवन में यह नकारात्मक परिस्थितियां क्यों निर्मित हो रही है ? यदि तुम्हारे जीवन में ऐसा कुछ असामान्य घट रहा, तो इसका एकमेव कारण यही है कि तुम्हारे जीवन में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश हो चुका है। कहां से आई यह नकारात्मक ऊर्जा तुम यदि अपने आस–पास नजर डालोगे तो तुम्हें उत्तर भी मिल जाएगा। पुराना सामान, अनुपयोगी, वस्तुएं जैसे बंद घड़ी, काले पड़ चूके कलश सिर्फ साल में एक बार दीवाली के समय ही जाले साफ करने के काम आने वाली झाड़ू और टूटी चप्पलें जैसी तमाम वस्तुएं तुमने अपने घर के स्टोर रूम या छत पर इकट्ठी कर रखी है, यही वस्तुएं नकारात्मक ऊर्जा का संचार कर रही है और तुम्हारे जीवन को कुप्रभावित कर रही है।

इन चीजों को सेवन खाली पेट भूलकर भी न करें

अच्छी सेहत के लिए खान–पान की अच्छी आदतों का होना बहुत जरूरी है। कुछ लोग वजन घटाने के चक्कर में सुबह खाली पेट कुछ ऐसी चीजों का सेवन कर लेते हैं जिससे उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ता है। खाली पेट होने से पेट में एसिड बनता है, जिससे पेट संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आज हम आपको कुछ ऐसी चीजों बारे में बताने जा रहे हैं जिसे खाने से सेहत पर बुरा असर पड़ता है।

संतरा – खाली पेट संतरे का सेवन नहीं करना चाहिए। संतरे में एसिड होता है, जिससे पेट में जलन होने लगती है। इससे स्टोन की समस्या भी हो सकती है।

शकरकंदी – शकरकंदी का खाली पेट सेवन करने से पाचन तंत्र पर प्रभाव पड़ता है। खाली पेट डाइजेस्ट नहीं होती, जिससे सीने में जलन होने लगती है।

ग्रीन टी – ग्रीन टी में कैफीन नामक तत्व पाया जाता है। इसे खाली पेट पीने से पेट में एसिड की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे एसिडिटी होती है।

दूध– खाली पेट दूध पीने से मसल्स कमजोर होते हैं। इसके अलावा कफ होने की संभावना बढ़ जाती है।

टमाटर – टमाटर खाने से पेट में अघुलनशील एसिड पैदा होता है जिससे स्टोन की समस्या हो सकती है।

मीठी चीजें– खाली पेट मीठी चीजों का सेवन करने से ब्लड मे शुगर की मात्रा बढ़ जाती है। इससे आपको एनर्जी मिलती है लेकिन अधिक मात्रा में लेने से थकान होती है।

चाय – कई लोग सुबह बेड टी लेना पसंद करते हैं। खाली पेट, चाय पीने से पेट में एसिड बनता है, जिससे अल्सर होने की संभावना बढ़ जाती है।

केला – केले में मैग्नीशियम अधिक मात्रा में पाया जाता है। इसे खाली पेट खाने से डाइजेशन सही तरह से नहीं होती।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

अलसीगढ़ दिनांक–15.05.1988 रोगी सेवा 10
अलसीगढ़ दिनांक–22.05.1988 रोगी सेवा 25
अलसीगढ़ दिनांक–29.05.1988 रोगी सेवा 29
अलसीगढ. दिनांक–05.06.1988 रोगी सेवा 31
पई दिनांक–12.06.1988 रोगी सेवा 45, अन्य सेवा 540
बड़ी दिनांक–19.06.1988 रोगी सेवा 315, अन्य सेवा 1200
अलसीगढ़ दिनांक–26.06.1988 रोगी सेवा 35

ये तीस जून 1988 तक जो भगवान ने करवाया। तेरा भाणा मीठा लागे। परमात्मा आपश्री पूर्ण न्यायकारी हैं भगवान ब्रह्माण्ड, प्रकृति, ईश्वर, निराकार, विष्णु भगवान विष्णु भगवान के चौबीस अवतार न्याय करते हैं। एक राजा के मंत्री को पुरोहित को लगाया कि योग कर्मकाण्ड बहुत हो गये हैं। अच्छी बात है कर्मकाण्ड भी अच्छे उनको लगा कि लोग बीज बोते हैं बबूल का और चाहते हैं आम जब नहीं मिलता है तो दुःखी होते हैं। कभी बीज बोते हैं नीम का, गुणकारी तो है लेकिन कड़वा होता है, और वो चाहते है अंगूर नहीं मिलता। उन्होंने राजा जी को पूर्व सूचना देकर उदाहरण प्रस्तुत किया।

एक हीरे मोती के व्यापारी के पास गये। राजा जी कहे पुरोहित जी ने मोती देखते–देखते मोती चुराकर के अपनी जेब में इस तरह से रख लिये कि व्यापारी देख लेवे, तुरन्त वो चिल्लाये– पुरोहित जी चोरी करते हो? अभी आपने मोती मेरे डिब्बे में से लेकर अपनी जेब में रख दिये। राजा तक बात पहुँची, पुरोहित ने कहा मैं पुरोहित हूँ, मैं इस वर्ण का हूँ। मेरा पद बहुत बड़ा है। चोरी की तो क्या हुआ? मैं पुरोहित हूँ। बड़ा आदमी हूँ। राजा ने कहा पुरोहित हो, सिपाही हो, दण्ड तो मिलेगा। आपने चोरी की तो आपको दण्ड मिलेगा। पुरोहित जी को यही बताना था। जैसा कर्म करेगा, वैसा फल देगा भगवान।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहिं, सो तस फल चाखा।

वैसा ही फल चखने को मिलेगा। कोई कर्म गलत नहीं करें, वाणी अच्छी बोलें, मन के भाव अच्छे रखें। ओम् शांति।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 383 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023